Likert Scaling Method
(लिकर्ट मापनी विधि)

थर्स्टन विधि के कुछ दोषों को दूर करने के उद्देश्य से Rensis Likert ने 1932 ई० में मनोवृत्ति मापनी की एक नयी विधि का प्रतिपादन किया जिसे संकलित रेटिंग्स विधि या लिकर्ट मापनी विधि कहा जाता है।

लिकर्ट विधि द्वारा मनोवृत्ति मापनी निर्माण में कुछ खास चरण अपनाये जाते हैं, जो निम्नांकित हैं—

→ इस विधि के प्रथम चरण में मनोवृत्ति वस्तु से संबंधित बहुत सारे कथन तैयार किये जाते हैं। जिनमें कुछ अनुकूल मनोवृत्ति तथा कुछ प्रतिकूल मनोवृत्ति दिखाने वाले होते हैं। प्रत्येक कथन के साथ 5 बिंदु का उत्तर श्रेणी भी बना होता है, जो है— पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत।

→ तैयार कथनों को प्रयोज्यों के समूह को इस निर्देश के साथ दे दिया जाता है कि वे प्रत्येक कथन को इन पाँच बिंदु उत्तर श्रेणियों में से किसी एक श्रेणी में रखकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

→ तीसरे चरण में प्रत्येक कथन पर प्रयोज्यों द्वारा की गई प्रतिक्रियाओं का अंकन किया जाता है। मनोवृत्ति वस्तु के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति वाले कथनों पर पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत के लिए क्रमशः 5, 4, 3, 2, और 1 अंक दिया जाता है तथा प्रतिकूल मनोवृत्ति वाले कथनों पर क्रमशः 1, 2, 3, 4, और 5 अंक दिये जाते हैं। प्रत्येक कथनों पर प्रयोज्य द्वारा प्राप्त अंकों को एक साथ जोड़कर कुल प्राप्तांक ज्ञात किया जाता है। उच्च प्राप्तांक अनुकूल मनोवृत्ति तथा निम्न प्राप्तांक प्रतिकूल मनोवृत्ति को बताता है।

→ चौथे चरण में कथनों का एकांश विश्लेषण किया जाता

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS

यह एकांश विश्लेषण एक ऐसी सांख्यिकीय विश्लेषण की विधि है, जिसके सहारे पक्षपातपूर्ण (discriminating) कथनों को अन्य सामान्य कथनों से अलग कर लिया जाता है। ऐसा करने के लिए प्रत्येक एकांश या कथन पर प्राप्त अंक तथा सभी एकांशों पर कुल अंक के बीच सहसंबंध ज्ञात किया जाता है। जिस एकांश का सहसंबंध अधिक होता है, उसका चयन मापनी हेतु कर लिया जाता है तथा निम्न सहसंबंध या ऋणात्मक संबंध वाले कथनों को छाँट दिया जाता है।

→ एकांश विश्लेषण के बाद जो कथन अंतिम रूप से चुने जाते हैं, उन्हें लेकर मापनी तैयार की जाती है, जिसे लिकर्ट मापनी कहा जाता है। जिसमें एकांशों की संख्या प्रायः 20 से 30 के बीच ही होती है।

लिकर्ट मापनी विधि द्वारा मनोवृत्ति मापने हेतु जिस व्यक्ति की मनोवृत्ति मापनी होती है, उसे लिकर्ट मापनी दे दी जाती है और व्यक्ति प्रत्येक कथन को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया 5 बिंदु श्रेणी पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, तथा पूर्णतः असहमत में से किसी एक का चयन कर देता है। जिसका अंकन कर प्रत्येक एकांश पर प्राप्त अंक को एक साथ जोड़ दिया जाता है तथा कुल प्राप्तांक प्राप्त कर लिया जाता है। कुल प्राप्तांक अधिक होने पर मनोवृत्ति वस्तु के प्रति व्यक्ति की मनोवृत्ति अनुकूल तथा निम्न प्राप्तांक होने पर व्यक्ति की मनोवृत्ति प्रतिकूल समझी जाती है।

समाज" मनोवैज्ञानिकों ने लिकर्ट मापनी विधि के कुछ गुण एवं दोष भी बतलाये हैं, जो निम्न हैं —

गुण —

→ इस विधि में एकांश विश्लेषण द्वारा भेदक या पक्षपातपूर्ण कथनों या एकांशों को चुनने का वैज्ञानिक प्रावधान है, जो इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है।

NOTES

Scanned with CamScanner

→ लिकर्ट विधि में निर्णायकों का प्रयोग न करके प्रयोज्यों का प्रयोग किया जाता है। जिससे कथनों का अंतिम चयन निर्णायकों की अपनी मनोवृत्ति से प्रभावित नहीं होता है।

→ लिकर्ट ~~विधि~~ द्वारा मनोवृत्ति मापनी बनाने में समय तथा ध्यान कम लगता है। अतः इसमें व्यावहारिकता का गुण अधिक है।

→ लिकर्ट विधि में सामान्य मनोवैज्ञानिक आवश्यकतानुसार श्रेणियों की संख्या को घटा-बढ़ा सकते हैं। इससे मापनी पर कोई अंतर नहीं आता है। अतः कहा जा सकता है कि इस विधि में लचीलापन का गुण अधिक है। साथ ही इससे प्राप्त आँकड़ों द्वारा विभिन्न तरह के क्रमबद्ध सांख्यिकीय विश्लेषण भी आसानी से किया जा सकता है।

अवगुण

→ लिकर्ट विधि का सबसे प्रमुख दोष यह है कि वैसे अंक जो अधिकतम प्राप्तांक तथा न्यूनतम प्राप्तांक के मध्य में आते हैं, उनके द्वारा व्यक्ति के मनोवृत्ति के बारे में क्या पता चलता है, इसकी व्याख्या नहीं की गई है। मध्य बिंदु या तटस्थ बिंदु दो भिन्न परिस्थितियों में आ सकते हैं। पहली परिस्थिति यह हो सकती है कि यदि प्रयोज्य अपनी प्रतिक्रिया प्रत्येक कथन के लिए 'अनिश्चित' में व्यक्त की हो या कुछ कथनों के लिए पूर्णतः सहमत तथा कुछ के लिए पूर्णतः असहमति की श्रेणी में प्रतिक्रिया दी हो। स्पष्ट है कि तटस्थ बिंदु पर पहुँचने के इन दोनों तरीकों का मनोवैज्ञानिक अर्थ समान नहीं है।

→ लिकर्ट विधि द्वारा मनोवृत्ति मापते समय इस बात की संभावना होती है कि प्रयोज्य सही मनोभाव को छुपाकर गलत प्रतिक्रिया करें। परंतु यह अवगुण सभी प्रकार के मापनियों एवं परीक्षणों में बनी रहती है।

→ इस विधि द्वारा बनायी गयी मनोवृत्ति मापनी से व्यक्ति के मनोवृत्ति की दिशा का तो पता चलता है, परंतु मनोवृत्ति की मात्रा का पता नहीं चल पाता है।

Scanned with CamScanner

→ लिकर्ट विधि में कथनों के चयन के लिए विशेषज्ञों के जगह पर प्रयोज्यों का प्रयोग किया जाता है। जिससे चयन प्रभावित होती है, क्योंकि प्रयोज्य विशेषज्ञों की तरह कुशल एवं प्रशिक्षित नहीं होते हैं।

लिकर्ट विधि के इन दोषों के बाद भी यह विधि थर्स्टन विधि की अपेक्षा अधिक सरल एवं सुगम है। यही कारण है कि यह समाज मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों के बीच अधिक लोकप्रिय है।

थर्स्टन-विधि तथा लिकर्ट-विधि का तुलनात्मक अध्ययन (A comparative study of Thurstone Method & Likert Method)

थर्स्टन विधि एवं लिकर्ट विधि की प्रमुख समानताएँ—

→ दोनों ही विधियों में शोधकर्ता मनोवृत्ति वस्तु से संबंधित कथनों या कथनों को बड़ी संख्या में तैयार करता है।

→ दोनों विधियों में कथनों का अंतिम चयन कुछ सांख्यिकीय विश्लेषण पर आधारित होता है।

→ दोनों ही विधियों में पर्याप्त विश्वसनीयता एवं वैधता का गुण पाया जाता है।

→ ये दोनों ही विधियाँ समाज मनोवैज्ञानिकों के बीच अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हैं तथा इनका उपयोग भी अधिक किया जाता है।

→ दोनों ही विधियों द्वारा तैयार मनोवृत्ति मापनी में कथनों की संख्या लगभग 20 से 30 के बीच होती है।

→ इन दोनों विधियों द्वारा ही मनोवृत्ति के सिर्फ दिशा का मापन किया जाता है, सही-सही मात्रा का नहीं।

थर्स्टन विधि एवं लिकर्ट विधि की प्रमुख विषमताएँ—

→ थर्स्टन विधि में 11 बिंदु मापनी होती है, जिसमें कथनों को बाँटा जाता है, जबकि लिकर्ट विधि में 5-बिंदु मापनी होती है जिसमें प्रयोज्यों द्वारा कथनों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है।

→ थर्स्टन विधि में कथनों को छाँटने के लिए विशेषज्ञों की मदद ली जाती है, जबकि लिकर्ट विधि में प्रयोज्यों की सहायता से ही एकांशों के प्रति प्रतिक्रिया प्राप्त कर ली जाती है।

→ थर्स्टन विधि में कथनों का अंतिम चयन चतुर्थांश मान (Q) तथा आंतरिक संगति के आधार पर होता है, जबकि लिकर्ट विधि में कथनों का अंतिम चयन एकांश विश्लेषण के आधार पर किया जाता है।

→ थर्स्टन विधि द्वारा मनोवृत्ति मापनी बनाने में अधिक समय तथा धन खर्च होता है, जबकि लिकर्ट मापनी कम समय एवं धन से तैयार हो जाती है।

→ थर्स्टन विधि में कथनों को छाँटने में निर्णायकों के अपने मनोवृत्ति का भी प्रभाव पड़ता है, जबकि लिकर्ट मापनी में यह समस्या नहीं होती है।

→ थर्स्टन विधि में भेदमूलक (discriminating) कथनों को अलग करने का कोई वैज्ञानिक तरीका उपलब्ध नहीं है, जबकि लिकर्ट विधि में एकांश विश्लेषण से सहसंबंध ज्ञात कर ऐसे कथनों को अलग कर लिया जाता है।

→ लिकर्ट विधि की लोकप्रियता उसमें निहित सरलता एवं सुगमता के कारण थर्स्टन विधि की अपेक्षा अधिक है।

→ क्रेच, क्रचफील्ड तथा बैलेची (1962) के अनुसार - लिकर्ट विधि की विश्वसनीयता थर्स्टन विधि की अपेक्षा अधिक है।

इसप्रकार, इन दोनों ही विधियों में कुछ समानताओं के साथ-साथ विषमताएँ भी हैं और प्रत्येक विधि की अपनी-अपनी परिसीमाएँ भी हैं। फिर भी ये दोनों ही विधियाँ समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों के बीच अधिक उपयोगी एवं लोकप्रिय हैं।